Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 September-October 2025 / VOL -02 ISSUE-II

09

राजस्थानी लोकगीत और परम्परा का महत्व

डॉ. संजय कुमार
मार्गदर्शक, सहायक प्राध्यापक
जय मीनेश आदिवासी विश्वविद्यालय, रनपुर कोटा

दीप्ति शर्मा
शोधार्थी
जय मीनेश आदिवासी विश्वविद्यालय, रणपुर कोटा

प्रस्तावना

राजस्थान की धरती वीरों, संतों, साधकों और कलाकारों की भूमि रही है। यहाँ की संस्कृति अपनी विशिष्टता, लोकपरंपराओं और लोकगीतों के कारण सम्पूर्ण भारत ही नहीं, अपितु विश्व भर में पहचानी जाती है। लोकगीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं हैं, वे समाज की सामूहिक स्मृति, भावनाओं और परंपराओं के संवाहक हैं।

राजस्थानी लोकगीत : परिभाषा, स्वरूप और उदाहरण

राजस्थान में जो गीत स्थानीय बोलीदृबानी (मारवाड़ी, मेवाड़ी, शेखावटी, हाड़ौती, मेवाती आदि) में समुदाय विशेष द्वारा गाए जाते हैं और जो समाज की परंपराओं, देवी–देवताओं, वीरगाथाओं और संस्कारों से जुड़े होते हैं, उन्हें राजस्थानी लोकगीत कहते हैं। लोकगीत वे गीत हैं जो किसी क्षेत्र, जाति या समाज में स्वतः उत्पन्न होकर लोकजीवन से जुड़े होते हैं।

ये गीत लिखित साहित्य नहीं, बल्कि मौखिक परंपरा से पीढ़ी–दर–पीढ़ी चलते आए हैं।

इनमें लोकजीवन की आस्था, दुख–सुख, परंपराएँ, और सांस्कृतिक चेतना अभिव्यक्त होती है।

1. मीराबाई के लोकगीत (भक्ति परंपरा)

मीराबाई (1498–1547) राजस्थानी लोक और भक्ति परंपरा की सबसे प्रसिद्ध कवयित्री हैं।

उनके भजन लोकधुनों पर आधारित होकर आज भी गाँव–गाँव में गाए जाते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि :

मीराबाई = भक्ति लोकगीत

पाबूजी, गोगाजी, तेजाजी, रामदेवजी = लोकदेवता गीत

बन्ना–बन्नी, घूमर = सामाजिक और नृत्य गीत

चारण–भाट गीत = वीरगाथा गीत

भक्ति–प्रधान लोकगीत

उदाहरण :

"पायो जी मैंने राम रतन धन पायो"
वस्तु अमोलिक दी मेरे सतगुरू,
कृपा कर अपनायो,
पायो जी मैंने राम रतन धन पायो
जन्म जन्म की पूंजी पाई,
जग में सबी खुमायो,
पायो जी मैंने राम रतन धन पायो
पायो जी मैंने राम रतन धन पायो
"मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई"
जा के सिर मोर–मुकुट मेरो पति सोई
मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई

2. घूमर गीत (नृत्यगीत)

घूमर राजस्थान का प्रमुख लोकनृत्य है। इसके साथ गाए जाने वाले गीत स्त्रियों की खुशी, उल्लास और सांस्कृतिक जीवन को दर्शाते हैं।

उदाहरण :

"घूमर खेले महारा, म्हारी सासरिये"

3. राजस्थानी लोकगीत की प्रमुख विशेषताएँ

- मौखिक परंपरा (लिखित न होकर मुख से मुख तक प्रचलित)।
- क्षेत्रीय बोली–बानी का प्रयोग।

©Copyright 2024 ADRJ. All Rights Reserved

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 September-October 2025 / VOL -02 ISSUE-II

- सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक अवसरों से जुड़ाव।
- सामूहिक गायन और सहभागिता।
- जीवन के हर अवसर (जन्म, विवाह, श्रम, युद्ध, भक्ति) का चित्रण।

4. राजस्थानी लोकगीतों के प्रकार और उदाहरण

लोकदेवता गीत

तेजाजी – "तेजाजी म्हारा नागदेव"
पाबूजी –"पाबू रा चालीसा"
गोगाजी – "जय गोगा जी धणी"
रामदेवजी का एक प्रसिद्ध लोकगीत (भजन)
रामदेवजी के लोकगीतों की विशेषताएँ

- इनमें रामदेवजी की समता, भाईचारा और चमत्कार का वर्णन मिलता है।
- ये गीत माँड, मारवाड़ी और हाड़ौती जैसी बोलियों में गाए जाते हैं।
- गीतों में उनकी शक्ति, चमत्कार और "गरीबों के राजा" की छवि उभरती है।
- ये अधिकतर भजन मंडलियों, मेलों और लोक उत्सवों में गाए जाते हैं।

(लोकधुनों में गाया जाने वाला)
"रामापीर जी जागा रे,
देवनो धणी..."
दूसरे रूपों में भी गाया जाता है जैसे –
"ओ नींदड़िया जागो रे रामापीर,
थारा धाम में आई भक्त मंडळी..."
नृत्य–गीत
घूमर गीत : "घूमर खेले महारा, म्हारी सासरिये"
गवर गीत : मेवाड़ क्षेत्र में प्रचलित।

सामाजिक/संस्कार गीत

बन्ना–बन्नी गीत (विवाह अवसर पर) :
"बन्ना रे बागा में झूला डलो"

राजस्थानी सामाजिक और नृत्यगीत

1. बन्ना–बन्नी गीत (सामाजिक/संस्कार गीत)

परिभाषा : विवाह के अवसर पर दूल्हे (बन्ना) और दुल्हन (बन्नी) को केंद्र में रखकर गाए जाने वाले गीतों को बन्ना–बन्नी गीत कहते हैं।

विशेषताएँ :

1. महिलाओं द्वारा सामूहिक रूप से गाए जाते हैं।
2. इनमें विवाह के रीति–रिवाज, मजाक, हँसी–ठिठोली और भावनाएँ झलकती हैं।
3. स्त्रियाँ इन गीतों में दूल्हे–दुल्हन की सुंदरता, शिष्टाचार और भावी जीवन की शुभकामनाएँ व्यक्त करती हैं।

उदाहरण :
"बन्ना रे बागा में झूला डलो"
"बन्नी म्हारी तो सजनी आवे रा"
जन्म का लोकगीत (मंगलगीत)
(शिशु के जन्म पर गाया जाने वाला गीत)
आँगणो रँगीलो हो गयो, आई लाडल री किलकारी,
माँ गूँजे सुख–सुरभि जैसी, भाग जगमग घर–न्यारी।
दूध–धूलो री खुशबू फैली, बाजे ढोलक–थाली,
नवा जीवन री ज्योत जगाई, आई भाग्य की डाली।
भावार्थ : बच्चे के जन्म से घर में खुशी और मंगलमय वातावरण छा जाता है। ढोलक–थाली बजती है और पूरा परिवार नए जीवन का स्वागत करता है।

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 September-October 2025 / VOL -02 ISSUE-II

युद्ध का लोकगीत (वीरगाथा)
रण बीच गूंजे नगाड़ो, वीर धरती रा लाल,
हल्दीघाटी रो सूरज चमके, रक्त रंगीने ढाल।
धरती माता रा वीर सपूत, तीर–कमान सँभाले,
नाम प्रताप रो अमर रहसी, रण में सिंह बघाले।
भावार्थ : यह गीत हल्दीघाटी जैसे युद्धों की वीरगाथा सुनाता है। इसमें रणभूमि का वर्णन है, जहाँ राणा प्रताप जैसे योद्धा देश और स्वाभिमान की रक्षा के लिए डटे रहे।
डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार : "लोकगीत लोकमानस की सजीव काव्य–रचनाएँ हैं, जिनमें उस समाज के जीवन का सहज चित्रण मिलता है।"
डॉ. लक्ष्मणसिंह चौधरी : "राजस्थानी लोकगीत राजस्थान की सांस्कृतिक आत्मा हैं। इनमें यहाँ के वीर इतिहास, भक्ति–भाव, स्त्री–जीवन और ग्राम्य संस्कृति का जीवन्त स्वरूप प्रतिबिम्बित होता है।"

राजस्थानी लोकगीत और स्त्री विमर्श

- स्त्रियाँ गीतों के माध्यम से अपनी व्यथा, विरह, प्रेम और आकांक्षा व्यक्त करती हैं।
- बन्ना–बन्नी गीत विवाह के समय स्त्रियों की भावनाओं का गहन चित्रण करते हैं।
- लोकगीत स्त्री की सृजनात्मकता और संवेदनशीलता को अभिव्यक्ति का मंच देते हैं।

भविष्य की संभावनाएँ और संरक्षण

- शैक्षणिक स्तर पर अध्ययन – विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों में लोकसंगीत पर शोध।
- डिजिटलीकरण – लोकगीतों का ऑडियो–वीडियो संरक्षण।
- युवा पीढ़ी को जोड़ना – स्कूल–कॉलेजों में लोकगीत प्रतियोगिताएँ।
- सरकारी और गैर–सरकारी प्रयास – कला परिषद, लोक संगीत अकादमी।

राजस्थानी लोकगीत का महत्व

- स्त्रियों की भावनाओं की अभिव्यक्ति – बन्ना–बन्नी, झूलों और विरह गीत।
- इतिहास का संरक्षण – वीरगाथाएँ, युद्धकथाएँ।
- सामाजिक एकता और सांस्कृतिक पहचान – मेले, त्यौहार, पर्वों पर सामूहिक गायन।
- लोकमानस की जीवंतता – लोकगीत ही वास्तविक जनमानस का दर्पण हैं।
- धार्मिक और भक्ति जीवन – मीराबाई, लोकदेवता गीत।

निष्कर्ष

राजस्थानी लोकगीत राजस्थान की संस्कृति की आत्मा हैं। वे केवल गान नहीं, बल्कि समाज का इतिहास, धर्म, कला, स्त्री–जीवन और सामाजिक चेतना का जीवंत रूप हैं। आज जब वैश्वीकरण और आधुनिकता के कारण लोकपरंपराएँ संकट में हैं, तो आवश्यक है कि हम इन्हें संरक्षित करें, नई पीढ़ी तक पहुँचाएँ और अंतरराष्ट्रीय मंच पर इनकी महत्ता स्थापित करें।

संदर्भ ग्रंथ

1. द्विवेदी, हजारीप्रसाद – भारतीय संस्कृति के स्वरूप।
2. चौधरी, लक्ष्मणसिंह – राजस्थानी लोकसंगीत का इतिहास।
3. लोकगीत संकलन – रामदेवरा मेला स्मारिका।
4. राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर – लोकसाहित्य शोध प्रकाशन।
5. मिश्र, रमेशचंद्र – भारतीय लोकसाहित्य।
6. शर्मा, हरिभाऊ – राजस्थान के लोकगीत (राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर)।
7. श्रीवास्तव, रामस्वरूप – लोकगीत और संस्कृति।

©Copyright 2024 ADRJ. All Rights Reserved